15

वैदिक शिक्षा का वर्णनात्मक प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उपयोगिता

नीतू पटेल*
शिव नंदन सिंह **
गौरव राव***

शिक्षा व्यक्ति में सिर्फ संज्ञानात्मक विकास ही नहीं करती है, बल्कि यह सामाजिक गुणों का विकास भी करती है, लेकिन शिक्षा का आधुनिक स्वरूप विद्यार्थियों में ज्ञानात्मक और क्रियात्मक पक्षों के विकास पर ही केंद्रित है, जो भावनात्मक पक्षों का प्रभावी रूप से विकास करने में सक्षम नहीं है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों में सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों आदि का विकास प्रभावी रूप से नहीं हो पा रहा है। आज के युवा संवेदनाहीन होते जा रहे हैं, एक-दूसरे की समस्याओं को नहीं समझ रहे हैं और ना ही आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे की सहायता कर पा रहे हैं। विद्यार्थियों को वैदिक काल के विभिन्न पहलुओं पर आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए नीति-निर्देशकों द्वारा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में प्रावधान किए गए हैं, जो इस सिद्धांत पर आधारित हैं कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्या-ज्ञान जैसी बुनियादी क्षमताओं के साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या-समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए, बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी विद्यार्थियों का विकास होना चाहिए, जिससे उनमें विभिन्न प्रकार के मूल्यों के साथ सर्वांगीण विकास हो सके। प्रस्तुत आलेख में यह जानने का प्रयास किया गया है कि, वैदिक कालीन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं की वर्तमान शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में क्या उपादेयता हो सकती है तथा यह किस प्रकार से वर्तमान शिक्षा की शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावी बना सकती है।

आधुनिक युग में विज्ञान की प्रगति के कारण दिन प्रतिदिन तरक्की होती जा रही है। विज्ञान ने तकनीकी विकास कर हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है और यह सब शिक्षा के कारण ही संभव हो पाया है। शिक्षा के कारण ही हमारे समाज का आधुनिकीकरण हो पाया है जिससे तकनीकी, आर्थिक और राजनीतिक आदि क्षेत्रों का विकास संभव हो सका (पाटिल, 2012)। तकनीकी आधारित आधुनिक विकास के कारण व्यक्ति कम से

**सहायक अध्यापिका* (संविदा), केंद्रीय विद्यालय 2, जे.एल.ए. बरेली, उत्तर प्रदेश 243 001
***शोधार्थी*, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड, विश्वविद्यालय बरेली, उत्तर प्रदेश 243 006
****सह-आचार्य*, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड, विश्वविद्यालय बरेली, उत्तर प्रदेश 243 006

कम समय व मानवीय श्रम लगाकर अधिक से अधिक कार्य कर सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक विस्तार होने के बाद भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अनेक त्रुटियाँ हैं। आधुनिक शिक्षा में संतुलन, विवेकशीलता, नैतिकता तथा सामाजिकता का स्थान समाप्त होता जा रहा है (श्रीवास्तव, 2017)। मनुष्य ने सफलता की ऊँचाइयों को छू लिया है, लेकिन उनमें आत्मसंतुष्टि, सहानुभूति, समानुभूति आदि गुणों का विकास नहीं हो पा रहा है जिसके फलस्वरूप आधुनिक शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर में गिरावट आई है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अनुशासन हीनता, नौतिक शिक्षा का अभाव, एक दूसरों की संवेदनाओं के प्रति अभाव तथा एक-दूसरे के प्रति आदर का अभाव होने के कारण इसकी गुणवत्ता में कमी होती जा रही है (शर्मा, 2022)। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने विद्यार्थियों को भारतीय सभ्यता, संस्कृति, जीवन मूल्यों, नैतिकता, परंपराओं से दूर कर दिया है, जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों में असंतोष, प्रतिस्पर्धा, द्वेष भावना आदि में वृद्धि हो रही है। आधुनिक भौतिकवादी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थी अपनी संस्कृति व सभ्यता को भूलते जा रहे हैं और शिक्षा की गुणवत्ता निम्न से निम्नतर होती जा रही है। शिक्षा व्यक्ति के तकनीकी व आर्थिक विकास का साधन मात्र बनकर रह गई है। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के नैतिक, सांवेगिक, शारीरिक तथा चारित्रिक विकास पर बल नहीं दिया जाता है, बल्कि यह शिक्षा व्यवस्था सिर्फ विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर ही बल देती है (जैन एवं शैली, 2015)। आज के विद्यार्थी पुस्तकों में दिए गए पाठ्य सामग्री को रट कर परीक्षा पास कर लेने को अपनी अद्भुत सफलता समझते हैं। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था व्यक्ति को स्वावलंबी बनाने की जगह उन्हें दूसरों पर आश्रित बनाती जा रही है, जिसके फलस्वरूप देश में बेरोजगारी की समस्या ने भयंकर रूप धारण कर लिया है।

यदि हम प्राचीनकाल में प्रचलित वैदिक कालीन शिक्षा को देखें तो उसका मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों का सर्वांगीण विकास करना था, जिसमें विद्यार्थियों को धनार्जन के लिए आवश्यक कौशलों के विकास की शिक्षा के साथ-साथ उनके सर्वांगीण विकास की शिक्षा अर्थात उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, चारित्रिक तथा नैतिक विकास के लिए शिक्षा प्रदान करना था। आधुनिक युग में जहाँ अध्यापक शिक्षा के नाम पर सिर्फ धन की उगाही करने से नहीं चूकते हैं, जिन्होंने शिक्षा को सिर्फ धनार्जन हेतु व्यवसाय मात्र बनाकर रखा है, जबकि वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था में सभी को निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था थी। वर्तमान शिक्षा व्यक्ति को चिकित्सक, अभियंता तथा अधिकारी आदि तो बना रही है, किंतु उनमें मानवता के गुणों का पूर्णतया विकास नहीं कर पा रही है। विद्यार्थी अपने अध्यापकों, अभिभावकों, बुजुर्गों आदि का सम्मान नहीं करते हैं, जबकि प्राचीन कालीन शिक्षा व्यवस्था में गुरु और शिष्य के बीच पिता-पुत्र के समान संबंधों का वर्णन मिलता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों में अनुशासन का लगभग पूर्णतया अभाव है (राथेर, 2015) वहीं प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों में स्वानुशासन का संप्रत्यय था, जहाँ विद्यार्थी स्वानुशासित रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन करते थे।

वैदिक कालीन शिक्षा के विभिन्न कारकों का आधुनिक अधिगम शिक्षण प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में प्राचीन कालीन शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं को सम्मिलित किया गया है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों में धनार्जन के लिए कौशल विकास, चारित्रिक विकास, शांति के लिए शिक्षा, स्वानुशासन के विकास तथा निःशुल्क एवं सार्वभौमिक शिक्षा आदि का प्रावधान किया गया है। वैदिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को आधुनिक शिक्षण व अधिगम व्यवस्था में सम्मिलित किए बिना हम विद्यार्थियों में भौतिक सुखों वाले वातावरण का विकास तो कर सकते हैं, लेकिन उनमें सहिष्णु, सामाजिक, कर्तव्य परायणता व मानसिक रूप से संतुष्ट समाज का विकास नहीं कर सकते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

वैदिक शिक्षा वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव है, जिसके आधार पर ही आधुनिक शिक्षा का विकास हुआ है। आज भी विद्यालयों में विद्यार्थियों को प्रदान की जा रही शिक्षा के उद्देश्य वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्यों के समान ही हैं। वैदिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना था, जिसके द्वारा ही विकसित और सभ्य समाज की कल्पना संभव है। यह व्यक्तियों के व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ उनमें जीविकोपार्जन हेतु उनके रुचि के व्यवसाय से संबंधित आवश्यक कौशलों का भी विकास करने में सक्षम थी। वैदिक कालीन शिक्षा की व्यक्तियों में उत्तम चारित्रिक विकास, सांवेगिक विकास, समाज के अनुरूप ज्ञान का सृजन, संस्कृति के प्रचार, प्रसार व संरक्षण तथा धार्मिक भावनाओं आदि का विकास करने में महत्तवपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षाविदों व शिक्षण अधिगम की नीति निर्धारण से जुड़े विषय विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर वैदिक कालीन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं जैसे कि विद्यार्थियों में नैतिक, सांवेगिक, व्यवसाय हेतु कौशलों, समाज के अन्य व्यक्तियों हेतु सहानुभूति आदि के विकास हेतु सुझाव दिए गए हैं। लेकिन विद्यालयों में विद्यार्थियों को प्रदान की जा रही वर्तमान शिक्षा मात्र आधुनिकीकरण व भौतिकता के विकास पर केंद्रित है, जिसने मनुष्यों को सिर्फ एक मशीन का रूप दे दिया है। शिक्षा केवल किताबों तक ही सीमित रह गई है, जिसमें सिर्फ किताबी ज्ञान को रटकर परीक्षा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर बल दिया जा रहा है। वैदिक कालीन शिक्षा में जहाँ गुरु शिष्य के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों पर विशेष ध्यान दिया जाता था, लेकिन आज के युग में अध्यापक और विद्यार्थियों के बीच परस्पर संबंध खराब होते जा रहे हैं। वैदिक कालीन शिक्षा के कुछ अनुकरणीय पहलुओं को नीति निर्धारकों द्वारा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समाकलित करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत आलेख वैदिक कालीन शिक्षा के विभिन्न सकारात्मक पहलुओं को वर्तमान शिक्षा नीति में समाकलित करने तथा उनका वर्तमान शिक्षण व अधिगम व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों से संबंधित है।

वैदिक कालीन शिक्षा के वर्तमान शिक्षा में अनुकरणीय पहलू

शिक्षण प्रक्रिया

वैदिक कालीन शिक्षा में गुरु अपने शिष्यों को शहर व नगरों से दूर प्राकृतिक वातावरण में पढ़ाने के लिए

वाचन के माध्यम से ज्ञान को प्रदर्शित करते थे, जिसे विद्यार्थी शांतिपूर्वक सुनते थे। विद्यार्थी लंबे समय तक ज्ञान को याद रख सकें इसके लिए वह इसके अर्थ को भी समझते थे और साथ ही इसका मनन करते रहते थे। वर्तमान समय में भी कुछ विषयों जैसे की हिंदी व व्याख्यान आधारित अन्य विषयों में प्रवचन आधारित व्याख्यान विधि का प्रयोग किया जाता है। यद्यपि वर्तमान समय में प्रभावी शिक्षण की अनेक विधियाँ व प्रविधियाँ हैं, लेकिन विषयवस्तु की प्रकृति को देखते हुए हम व्याख्यान विधि को शिक्षण विधि से बहिष्कृत नहीं कर सकते। आज भी जब एक बड़ी संख्या वाली कक्षा में विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान व हिंदी जैसे विषयों को पढ़ाना होता है तो हम इसी का उपयोग करते हैं। इस प्रविधि के माध्यम से कम समय में अधिकतम समग्री को प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यार्थियों को किसी भी संप्रत्यय को समझकर चिंतन कर पढ़ने पर बल दिया गया है। अतः हम कह सकते हैं कि वैदिक-कालीन शिक्षण प्रक्रिया का आधुनिक शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है।

मूल्यों का विकास

आधुनिक युग में विद्यार्थियों में जीवन-यापन तथा आर्थिक स्तर को उच्च करने के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, किंतु यह विद्यार्थियों में सामाजिक व नैतिक मूल्यों का विकास करने पर बल नहीं देता है। वैदिक कालीन शिक्षा विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम से संबंधित ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उनमें सामाजिक, राजनैतिक तथा नैतिक मूल्यों के विकास पर भी बल देती थी। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के द्वारा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में वैदिक शिक्षा के इन मूल्य आधारित शिक्षा को सम्मिलित करने पर बल दिया गया है। मूल्य आधारित शिक्षण व अधिगम व्यवस्था से समाज में सामाजिक रूप से सभ्य और तकनीकी रूप से सदृढ़ नागरिकों का विकास हो सकेगा। वह समाज के लोगों की आर्थिक, सामाजिक व सांवेगिक रूप से एक-दूसरे की सहायता कर सकेंगे। इसके साथ ही वह समाज के अन्य लोगों के दुख व समाज की आवश्यकताओं को समझ सकेंगे और उन्हीं के अनुरूप कार्य करेंगे।

गुरु-शिष्य संबंध

वैदिक कालीन शिक्षा में गुरु और शिष्य में पिता-पुत्र के जैसे संबंध थे। शिष्य अपने गुरुजनों द्वारा दिए गए आदेशों को मानते थे और गुरु द्वारा जो भी दायित्व सौपें जाते थे, उनका सही प्रकार से निर्वहन करते थे, जबकि आधुनिक शिक्षण प्रणाली में विद्यार्थियों व अध्यापकों के बीच संबंध अच्छे नहीं हैं। उनके बीच सिर्फ व्यापारिक संबंध हैं, जिसके अंतर्गत शिक्षक अपना कर्तव्य विद्यार्थियों को सिर्फ किताबी ज्ञान प्रदान करना तथा विद्यार्थी सिर्फ शिक्षण शुल्क देकर अध्यापकों के प्रति दायित्व को पूरा कर लेते हैं। वह अध्यापकों के शिक्षण अधिगम के अतिरिक्त अन्य बातों पर ध्यान नहीं देते हैं। अतः आधुनिक शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में वैदिक कालीन शिक्षण के गुरु व शिष्य के बीच परस्पर मधुर संबंधों को समाकलित करने की अति आवश्यकता है, जिससे अध्यापक व विद्यार्थियों के बीच संबंधों को सुधारा जा सके। अध्यापकों व विद्यार्थियों के बीच संबंधों को सुधारने के लिए विद्यार्थियों को ऑनलाइन तथा

दूरस्थ शिक्षा के स्थान पर औपचारिक शिक्षा के लिए प्रेरित करना चाहिए, जिससे विद्यार्थी विद्यालयों में अध्यापकों के साथ अधिक समय तक रहकर उनके उत्तम आचरणों को सीखने के साथ-साथ संबंधों को भी मधुर बना सकें।

अनुशासन

शिक्षण अधिगम की आधुनिक व्यवस्था में विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक स्तर तो उच्च है, लेकिन यह तब तक प्रभावी नहीं हो सकता जब तक कि वे अनुशासन में रहकर अपने ज्ञान को सीखें और प्रयोग करें। वैदिक कालीन शिक्षण व्यवस्था में स्वानुशासन का संप्रत्यय था, जिसके अंतर्गत विद्यार्थी अपने आपको संयमित रखते थे। वह आश्रम से लेकर घर तक निर्धारित किए गए नियमों का पालन करते थे तथा उन्हें किसी भी प्रकार के अतिरिक्त निर्देशन की आवश्यकता नहीं होती थी। वर्तमान शिक्षा नीति में इसी प्रकार के अनुशासन की अनुशंसा की गई है। जब विद्यार्थी स्वानुशासित होंगे तो वह स्वयं को संयमित रखकर अधिगम करेंगे, विद्यालय से लेकर घर व समाज में किसी भी नियम का उल्लंघन नहीं करेंगे, फलतः वह समाज के कुशल नागरिक बन सकेंगे। अनुशासन के अतिरिक्त विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण व अधिगम प्रक्रिया, विद्यार्थियों की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति एवं पहचान तथा उनके विकास हेतु प्रयास करने पर भी बल दिया गया है।

सर्वांगीण विकास

वैदिक कालीन शिक्षण अधिगम व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास अर्थात उनका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, चारित्रिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, तार्किक तथा नैतिक विकास करने के साथ-साथ उन्हें रोजगार के लिए सक्षम बनाना था। आधुनिक युग में अध्यापक विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक और क्रियात्मक पक्ष के विकास पर तो पूरा ध्यान दे रहे हैं, किंतु उनके भावात्मक पक्ष की ओर उतना ध्यान नहीं दे रहे हैं। विद्यार्थी मानसिक रूप से तो विकसित हो रहे हैं, लेकिन उनमें सामाजिक व नैतिक मूल्यों का दिन-प्रतिदिन क्षरण होता जा रहा है। शिक्षाविदों व नीतिशास्त्रियों द्वारा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु सुझाव दिए गए हैं, जिसके फलस्वरूप अध्यापक वैदिक कालीन शिक्षण आधारित विधियों का प्रयोग कर विद्यार्थियों को सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा प्रदान कर सकेंगे। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अधिगम में खेल समन्वयन, जिसके फलस्वरूप उनमें परस्पर सहयोग, स्वतः पहल करना, स्वयं निर्देशित होकर कार्य करना तथा स्वानुशासन जैसे कौशलों का विकास हो सकेगा। अनुभव, खोज तथा प्रयोग आधारित अधिगम एवं रटने के बजाय समझ आधारित अधिगम का प्रयोग किया जाएगा, जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों में स्वयं करके सीखने के साथ विभिन्न आवश्यक कौशलों तथा आलोचनात्मक क्षमताओं का विकास हो सकेगा।

निःशुल्क एवं सार्वभौमिक शिक्षा

वैदिक कालीन शिक्षण अधिगम की व्यवस्था में निःशुल्क और सार्वभौमिक शिक्षा की व्यवस्था का प्रावधान था, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को आश्रम

में रहकर बिना किसी शुल्क के शिक्षा प्राप्त करते थे। वैदिक शिक्षा व्यवस्था के आधार पर नीति-निर्देशकों के सुझाव पर शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 व *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी विद्यार्थियों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है। नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा के प्रावधान से विद्यालय में विद्यार्थियों की नामांकन दर में वृद्धि के साथ-साथ शिक्षा की पहुँच में वृद्धि हुई है।

राष्ट्रीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार एवं संस्कृति संरक्षण हेतु शिक्षा

आश्रम में गुरुजनों द्वारा अपने शिष्यों को दी जाने वाली शिक्षा का एक उद्देश्य अपनी राष्ट्रीय विरासत का प्रचार प्रसार व संस्कृति का संरक्षण करना था। इससे किसी भी देश की संस्कृति को संरक्षित करने के साथ-साथ उसका विकास भी किया जा सकता है। वैदिक शिक्षा के आधार पर *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* द्वारा शिक्षा व्यवस्था में इस प्रकार के शिक्षण की व्यवस्था का प्रावधान किया गया है कि विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रसार एवं प्रचार के साथ उनका विकास भी कर सकें। भारत भ्रमण, भारत के खूबसूरत एवं हाथ से बने कपड़े खरीदना, भारत के प्राचीन साहित्य को पढ़ना, योग एवं ध्यान का अभ्यास करना, भारतीय दर्शनशास्त्र से प्रेरित होना, वैविध्यपूर्ण कला एवं संगीत की सराहना तथा विभिन्न भारतीय त्योहारों में भाग लेना आदि भारतीय कला एवं संस्कृति का संवर्धन करने में सहायक हैं। संस्कृति के प्रसार का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम कला है, इसलिए इसे प्रारंभिक शिक्षा से आरंभ करते हुए शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों को प्रदान करने की अनुशंसा की गई है।

विद्यालय प्रवेश एवं दीक्षांत समारोह

वैदिक कालीन शिक्षा में विद्यार्थियों के प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश के लिए विद्यारंभ व आश्रम में प्रवेश के लिए उपनयन संस्कार की व्यवस्था थी। शिक्षा के पूर्ण हो जाने पर समावर्तन संस्कार का प्रावधान था। वैदिक शिक्षा के आधार पर ही विद्यालयों में विभिन्न स्तरों पर प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को उनकी रुचि व योग्यता के अनुसार विद्यालयों का आवंटन करने में सुविधा रहती है। विद्यार्थियों की एक स्तर की शिक्षा के पूर्ण हो जाने पर दीक्षांत समारोह के आयोजन की व्यवस्था की गई है, जिसमें उन्हें उनकी शिक्षा से संबंधित प्रमाण-पत्र या उपाधि से सम्मानित किए जाने के साथ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। दीक्षांत समारोह के माध्यम से विद्यार्थियों में अपने सहपाठियों के प्रति स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, अतिथियों के उद्‌बोधन से अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा तथा भविष्य के प्रति अभिप्रेरण एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों के माध्यम से संस्कृति के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है, अतः उनका संवेगात्मक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक तथा सांस्कृतिक विकास होता है।

भारतीय जड़ों और गौरव से बाँधे रखने हेतु शिक्षा

वैदिक काल में आश्रमों में प्रदान की जाने वाली शिक्षण अधिगम प्रणाली के माध्यम से शिष्यों को भारतीय इतिहास से संबंधित शिक्षा प्रदान की जाती थी, जो विद्यार्थियों को भारतीय परंपरा की जड़ों और गौरव से जोड़े रखती थी। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*

में भी विद्यार्थियों को भारतीय जड़ों और गौरव से बँधे रहने हेतु शिक्षा प्रदान करने की अनुशंसा की गई है और साथ ही यह भी सुझाव दिया गया है कि जहाँ प्रासंगिक लगे वहाँ भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति तथा ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं को शामिल किया जाए।

दंड व्यवस्था

प्राचीन कालीन शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के लिए कठोर दंड का प्रावधान नहीं था। यदि विद्यार्थी कोई गलती करते थे तो उन्हें श्रम आधारित दंड दिया जाता था। अर्थात हम कह सकते हैं की वैदिक कालीन शिक्षा में शरीरिक व आर्थिक दंड जैसे कठोर दंड विद्यार्थियों को नहीं दिए जाते थे। वैदिक शिक्षा के आधार पर *राष्ट्रीय* शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के लिए किसी भी प्रकार के शारीरिक दंड का प्रावधान नहीं है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार यदि कोई अध्यापक किसी विद्यार्थी को किसी प्रकार का दंड देता है तो उसके प्रति कार्यवाही सुनिश्चित है।

व्यावसायिक शिक्षा

विद्यार्थियों के लिए प्राचीन काल से ही व्यवसाय आधारित शिक्षा की व्यवस्था की गई है। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में उनकी रुचि के अनुसार कौशलों का विकास किया जाता रहा है जिससे वह इससे संबंधित कौशल आधारित ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन को सूचारु रूप से चलाने के लिए व्यावसाय की शुरुआत कर सकें। व्यावसायिक शिक्षा की उपयोगिता को देखते हुए शिक्षाशास्त्रियों व नीति-निर्धारकों द्वारा शिक्षा नीतियों के माध्यम से वर्तमान शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा का प्रावधान किया गया है।

शिक्षा की व्यापकता

वैदिक शिक्षा 'वसुधैव कुटम्बकम' तथा 'सर्वभूत हिते रता' जैसे विशेषणों पर आधारित थी, जिसका उद्देश्य सिर्फ आत्म-कल्याण तक सीमित ना होकर सभी प्राणियों के कल्याण एवं अंतर्राष्ट्रीय भातृत्व भाव पर आधारित था। इसी को ध्यान में रखते हुए शिक्षा की व्यापकता को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समाकलित किया गया है। इससे विद्यार्थियों में संपूर्ण विश्व के प्रति भातृत्व की भावना का विकास होगा और सभी प्राणियों के प्रति कल्याण की भावना का विकास होगा।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध आलेख के निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ हो सकते हैं—

- प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों हेतु खेल गतिविधियों को समाकलित कर अध्यापन कार्य करना चाहिए, जिससे उनमें शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक विकास तथा सहयोग की भावना का भी विकास हो सके।
- अध्यापकों द्वारा खोजपूर्ण, क्रियाकलाप, करके सीखने तथा अनुभव आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को अपनाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में ज्ञान को रटने के स्थान पर स्वयं के अनुभव के आधार पर सृजित किया जा सके।
- प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों विद्यार्थियों को राष्ट्रीय महत्व के स्मारक स्थलों का भ्रमण कराकर उनकी महत्वता के बारे में जानकारी

प्रदान करनी चाहिए, जिससे उनमें इसके प्रति प्रचार, प्रसार तथा संरक्षण का भाव विकसित हो सके।

- अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों का विकास करना चाहिए, जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों के आपसी संबंधों के साथ-साथ विद्यार्थी व अध्यापकों के बीच संबंधों को भी प्रगाढ़ बनाया जा सके।
- अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को भारत के गौरवशाली अतीत से संबंधित शिक्षा को प्रदान करना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को भारतीय जड़ों और गौरव से बाँधकर रखा जा सके।

निष्कर्ष

वैदिक शिक्षा आश्रम तथा गुरुकुल में गुरु के समीप रहकर प्राकृतिक एवं शांत वातावरण में प्रदान की जाती थी, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक गुणों का विकास किया जाता था, किंतु वर्तमान शिक्षा प्रकृति से दूर होती जा रही है, जो विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक पक्षों के विकास पर तो बल दे रही है, जिससे वह भौतिक सुख-सुविधाओं को एकत्रित कर सकते हैं, किंतु उन्हें नैतिकता, आध्यात्मिकता तथा सांवेगिकता के विकास से दूर करती जा रही है। फलस्वरूप वर्तमान विद्यार्थियों में वैदिक शिक्षा में निहित मूल्यों का पतन दिन-प्रतिदिन होता जा रहा है। इस प्रकार विद्यार्थियों को बिना सामाजिक मूल्यों वाली शिक्षा प्रदान करके तकनीकी रूप से दक्ष नागरिकों को तो प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन समाज का विकास करने वाले सभ्य नागरिकों से वंचित रह जाएँगे। यदि हम समाज के लोगों में मूल्यों को संजोए रखना चाहते हैं तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में वैदिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है, जिससे अध्यापक व विद्यार्थियों के बीच मधुर संबंध, समाज के लोगों में सामाजिक, आर्थिक, नैतिक तथा चारित्रिक मूल्यों का विकास हो सके। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु वैदिक कालीन आधारित शिक्षण व्यवस्था के आधार पर विभिन्न पहलुओं का समावेशन किया गया है, जिससे विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक के साथ-साथ भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष का भी विकास हो सकेगा। वैदिक कालीन मूल्य आधारित शिक्षण अधिगम व्यवस्था से हमारे समाज को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांवेगिक रूप से कुशल नागरिक मिल सकेंगे।

संदर्भ

जैन, के. और शैली. 2015. रिलेवेंस ऑफ गुरुकुल एजुकेशन सिस्टम इन प्रेजेंट सर्कम्सटेंसेस— ए फिलोसफिक्ल परसेप्शन. *जर्नल ऑफ फिलोस्फी कल्चर एंड रिलिजन*. पृ.सं. 12. आई.पी.आर.जे.बी.

पाटिल, एन.पी. 2012. रोल ऑफ एजुकेशन इन सोशल चेंज. *इंटरनेशनल एजुकेशनल ई-जर्नल*. 1(2). ए.ए.सी.ई.

मिनिस्ट्री ऑफ लॉ एंड जस्टिस. 2009. *द राइट ऑफ चिल्ड्रन टू फ्री एंड कंपल्सरी एजुकेशन एक्ट 2009*. भाग 2 खंड 1. विधि और न्याय मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

राथेर, जेड.ए. 2015. रिलेवेंस वैदिक आइडियल्स ऑफ एजुकेशन इन द मॉडर्न एजुकेशन सिस्टम. *जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीस एंड सोशल साइंसेस*. 20(1). पृ.सं. 30–36. आई.ओ.एस.आर.

शर्मा, जी.डी. 2022. डिटेरियोरेशन ऑफ वैल्यूज इन सेकेंडरी एजुकेशन एंड इंडियन पर्सपेक्टिव. *द क्रिएटिव लांचर*. 7(2).

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय. भारत सरकार, नई दिल्ली.

श्रीवास्तव, एस.के. 2017. प्रमोशन ऑफ मोरल वैल्यूज थ्रू एजुकेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंस*. 7(6). आई.जे.एम.आर.ए.